

आपकी अपनी किताब

लेखक: हुसैन अहमद तरब

अहमर करीम पब्लिकेशन, जोधपुर

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम
(आपकी अपनी किताब)

अ़ाम तौ़र पर ये बात कही और सुनी जाती है कि कुरआन मुसलमानों की मज़हबी किताब है जबकि ह़क़ीक़त ये है कि ये किताब रूए ज़मीन पर पाये जाने वाले तमाम इंसानों की किताब है। जो इंसान इसको समझकर पढ़ता है, इसकी तालीम पर अ़मल करता है, ये उसकी ज़िन्दगी में एक ऐसा इन्क़लाब बरपा कर देती है जिसे देखकर दूसरे लोग भी ह़ैरान रह जाते हैं।

कुरआन मजीद को सिर्फ़ मुसलमानों की मज़हबी किताब समझने का ये नतीजा हुआ कि कुरआन एक कोने में समेट कर रख दिया गया जबकि इस किताब का दायरा आसमान की त़रह़ इन्तिहाई फैला हुआ है। जो किताब तमाम इंसानों की हिदायत के लिये नाज़िल की गई हो, जिस किताब में न सिर्फ़ मज़हब बल्कि अनगिनत उ़लूम के जवाहर बिखरे हुए हों वो सिर्फ़ मुसलमानों की एक मज़हबी किताब कैसे हो सकती है?

आपने इस किताब को अपना नहीं समझा, इसलिये आप इससे दूर होते चले गए। इंसानी फ़ित्रत है कि वो जिसको अपना नहीं समझता जिसकी कुरबत से उसे ख़ुशी और सुकून नहीं मिलता, जिससे कुछ नफ़ा पहुँचने की उसको उम्मीद नहीं होती वो उसके क़रीब भी नहीं फटकता। उससे दूर होता चला जाता है। यही कुरआन जैसे दोस्त और रफ़ीक़ और रहबर व रहनुमा के साथ हुआ। जो आपका बेहतरीन दोस्त और साथी था। जो आपका सच्चा रहबर था, जो आपको हमेशा होने वाले नुक़्सा़न से बचाकर नफ़ा ही नफ़ा पहुँचाने वाला था आप उसके क़रीब जाने की बजाय उससे दूर होते चले गए।

कुरआन मजीद की रोशन और ताबनाक आयात के ज़रिये हम आपको बताएँगे कि ये किताब आपकी अपनी किताब कैसे है ? ये आपका बेहतरीन दोस्त व रफ़ीक़ क्योंकर है ? ये आपकी रहबरी व रहनुमाई किस त़रह़ करती है ? ये आपको नुक़्सा़न से बचाकर

नफ़ाअन्दोज़ कैसे करती है ? इससे दूरी किस तरह आपकी ज़िन्दगी के पूरे सरमाये को बर्बाद कर देगी और इसको अपना समझकर इसको क़रीब आने पर ये किस तरह आपको हमेशा रहने वाली कामयाबी से हमकिनार करेगी ?

दुनिया में मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर लाखों किताबें इंसानों के ज़रिये लिखी जा चुकी हैं जिनमें दूसरों का ज़िक्र दूसरों के ह़ालात, दूसरों की ईजादात वग़ैरह का ज़िक्र मिलता है। क़ुरआन मजीद तन्हा ऐसी किताब है जिसमें आपका ज़िक्र है क्योंकि ये आपकी अपनी किताब है। आप किसी भी मज़हब से तअ़ल्लुक़ रखते हों, आप हैं तो इंसान ही, हैं तो आदम व ह़व्वा की औलाद ही। ये किताब इंसान के अपने ज़िक्र से भरी पड़ी है। इसे सिर्फ़ मुसलमानों की मज़हबी किताब समझकर आपने जोड़े रखा। एक ख़ज़ाना जिससे आपको फ़ायदा उठाना चाहिए था आपने उसे सिर्फ़ मुसलमानों के लिये वक़्फ़ करके बड़ी नादानी की, बड़ी नासमझी दिखाई। कोई अगर ये कहे कि सूरज सिर्फ़ मुसलमानों का है उसकी रोशनी से हम क्यों फ़ायदा उठाएँ। उसे मुसलमानों के रब ने बनाया है, हम तो राम को और ईश्वर को मानने वाले हैं। सूरज के बारे में ऐसा तस़व्वुर ज़हन में क़ायम करके वो अंधेरों में डूबे रहना ही अच्छा समझेगा और उन उजालों से मह़रूम हो जाएगा जिस पर तमाम इंसानों के रब, अल्लाह तआ़ला ने सबका ह़क़ बराबर का रखा है। कोई अगर ये कहे कि बादलो को बारिश बरसाने के लिये उठाने वाला मुसलमानों का रब है हम उसके पानी से क्यों फ़ायदा उठायें तो वो अपनी फ़स़लों को तबाह कर बैठेगा और प्यासा ही रहना बेहतर समझेगा। उस पानी से मह़रूम रहेगा जिस पर तमाम इंसानों के रब अल्लाह ने सबका ह़क़ बराबर रखा है।

इ़ल्म की रोशनी बिखेरने वाला क़ुरआन का सूरज, इ़ल्म का पानी बरसाने वाला क़ुरआन भी इसी तरह आपका अपना है। आपको फ़ायदा पहुँचाने के लिये है। जिस तरह आसमान पर चमकने वाला

सूरज और पानी से भरे हुए बादल हैं। आप अपनी चीज़ को बेगानी चीज़ न समझें। अ़क्लमंदी इसी में है।

सूरह अम्बिया की आयत 10 में है **''तह़क़ीक़ कि हमने तुम्हारी त़रफ़ एक ऐसी किताब नाज़िल की है जिसमे तुम्हारा अपना ही ज़िक्र है। क्या तुम अ़क्ल से काम नहीं लेते हो।''** दूसरी किताबों के मुक़ाबले में ये किताब (क़ुरआन) सबसे अनोखी किताब है कि जिसमें आप ही का ज़िक्र है। इसमें गुज़री हुई क़ौमों के ह़ालात इसलिये बयान किये गए हैं ताकि आपको इ़ब्रत ह़ासिल हो सके। आप उन जैसे काम करके ग़लत़ राहों पर न बढ़ जाएँ। उनकी त़रह़ हलाकत व बर्बादी के शिकार न हो जाएँ। आपकी अपनी किताब आपको इ़ब्रत का वो सबक़ पढ़ाती है जो किसी मदरसे, किसी स्कूल, किसी कॉलेज, किसी यूनिवर्सिटी में नहीं पढ़ाया जाता।

इस किताब में ज़िन्दगी गुज़ारने का वो त़रीक़ा आपको बताया गया है जो आपको अपने रब की रज़ा ह़ासिल करने में मददगार साबित होता है। बुरे कामों से तौबा करके उनको आइन्दा के लिये छोड़ देना, अपनी इस्लाह़ करना, बेख़ौफ़ी से जीने की बजाय अल्लाह का ख़ौफ़ दिल में रखते हुए मौत को याद रखते हुए, मौत के बाद की हमेशगी की ज़िन्दगी की तैयारी करते हुए ज़िन्दगी के दिन गुज़ारना। ये सब रहनुमा उसूल आपकी अपनी किताब आप ही के फ़ायदे के लिये आपको सिखाती है ताकि आप दुनिया में इत़्मिनान के साथ सीधे रास्ते पर चलते रहें।

क़ियामत के दिन दो त़रह़ के मंज़र आपके सामने होंगे। एक त़रफ़ भड़कते हुए शोले, दूसरी त़रफ़ लहलहाते हुए बाग़। ये किताब आपको भड़कते हुए शोलों से बचाकर लहलहाते हुए ह़सीन और शादाब बाग़ों में पहुँचाना चाहती है और आप उसी से बेगाने बने हुए हो। आख़िर आप अ़क्ल से काम क्यों नहीं लेते ? आख़िर आपकी समझ को ज़ंग क्यों लग गया है ? आख़िर हमे अपना नफ़ा नुक़्स़ान क्यों दिखाई नहीं दे रहा है ? ये किताब आपको बतायेगी कि बुरे काम करते करते आपका दिल सख़्त हो जाने की वजह से ऐसा हो

रहा है। ये आपको इस बीमारी से छुटकारा पाने की दवा भी बतायेगी।

सूरह यूनुस आयत 57 में है **''ऐ लोगो! इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत और सीनों में छुपे हुए रोग और बीमारियों के लिये शिफ़ा और मोमिनीन के लिये हिदायत और रहमत आ चुकी है।''** इस आयत में अल्लाह तआला सिर्फ़ मुसलमानों से मुख़ातिब नहीं है बल्कि उसका ख़िताब आम इंसानों से है ख़्वाह वो किसी भी मज़हब और मस्लक को मानने वाले हों, या किसी भी मज़हब को न मानते हो। अल्लाह के वुजूद के मुनकिर हों। दूसरी बात ये कि उन सब लोगों का रब, ख़ालिक़ और मालिक एक ही है और वो अकेला है उसने ये किताब सबकी हिदायत और नसीहत के लिये उतारी है। उसे सिर्फ़ मुसलमानों की किताब कहने और समझने वालों ने बड़ी ग़लती की। क्या दिलों के रोग 'हिर्स' हसद, गुरूर, मालो दौलत की बेजा मुहब्बत ग़फ़्लत वग़ैरह सिर्फ़ मुसलमानों में ही पैदा होते हैं ? क्या हिदायत और रहमत के मोहताज सिर्फ़ मुसलमान ही हैं ? सोचो और ग़ौर करो। आप पर ये हक़ीक़त खुल जाएगी कि ये किताब आपके लिये उतनी भी मुफ़ीद है जितनी उनके लिये है जो इस्लाम के पैरूकार कहलाते हैं। इस किताब से जुड़ते ही आपके लिये भी शिफ़ा, हिदायत और रहमत के दरवाज़े खुलते चले जायेंगे।

सूरह निसाअ आयत 124 में है **''ऐ लोगो! तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास रोशन दलील आ गई है और हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसी रोशनी भेज दी है जो तुम्हें साफ़ साफ़ रास्ता दिखाने वाली है। अब जो लोग अल्लाह की बात मान लेंगे और उसकी किताब को मज़बूती से पकड़ लेंगे, उनको अल्लाह अपनी रहमत और फ़ज़्ल से नवाज़ेगा और उनको अपनी तरफ़ आने का सीधा रास्ता दिखा देगा।''** इस आयत में भी अल्लाह तआला मुसलमानों से मुख़ातिब न होकर लोगों से मुख़ातिब है। दुनिया के तमाम इंसानों से मुख़ातिब होकर फ़र्मा रहा है

कि कुरआन की शक्ल में सबके लिये एक मज़बूत दलील और वाज़ेह रोशनी आसमान से उतारी गई है। अपनी बातचीत में दलील व बुरहान की किसे ज़रूरत नहीं पड़ती ? हिदायत की वाज़ेह रोशनी का कौन हाजतमंद नहीं होता ? सब होते हैं और यक़ीनन सब ही होते हैं तो कुरआन भी सबके लिये है न कि सिर्फ़ मुसलमानों के लिये। कुरआन को अपनाने वालों के लिये कितने ज़बरदस्त इन्आम की खुशख़बरी है। अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके फ़ज़्ल और रह़मत की खुशख़बरी उसका फ़ज़्ल और रह़मत जिसको मिल जाए वही हर लिहाज़ से कामयाब व कामरान होगा। दुनिया में उसे सच्ची खुशी हासिल होगी और आख़िरत में हर तरह़ के अज़ाब से बचा रहेगा। कुरआन सब इंसानों का मुह़सिन है जो उनको कामयाब होने के नुस्ख़े बताता है। अब अगर कोई उसकी तरफ़ से ग़ाफ़िल रहेगा तो अपना नुक़सान खुद करेगा।

सूरह बक़रह आयत 185 में है **''रमज़ान का महीना वो है जिसमें कुरआन नाज़िल किया गया जो लोगो के लिये हिदायत का सबब है और जिसमें ऐसे रोशन दलाइल हैं जो सही रास्ता दिखाते हैं और ह़क़ व बातिल के बीच फ़ैसला कर देते हैं।''**

इस आयत में कुरआन को लोगों की हिदायत का सबब बताया गया है इसी के साथ इसकी दो खूबियां और भी बयान की गई हैं। अव्वल ये कि इसमें हिदायत के वाज़ेह दलाइल और स़ह़ीह़ व ग़लत़ के फ़र्क़ को नुमायाँ करने वाली आयात हैं। हिदायत यानी रहनुमाई के सब इंसान मोह़ताज हैं। दलाइल की सबको ज़रूरत पड़ती है, सही और ग़लत़ के फ़र्क़ को समझकर सही चीज़ों को अपनाना और ग़लत चीज़ों को छोड़ देना सबके लिये अहम और लाज़मी है। इसीलिए कुरआन सब इंसानों की एक मुकम्मल और मुफ़स्सल किताब है। सही और ग़लत़ के फ़र्क़ को इस किताब में मज़बूत़ दलाइल से बिलकुल वाज़ेह कर दिया गया है। इंसानों ! आओ इस किताब तक। पाओ वो इल्मो अ़मल का ख़ज़ाना जिसे

तुमने इस किताब को सिर्फ़ मुसलमानों की किताब समझकर अब तक हाथ नहीं लगाया। जागो ! उस ग़फ़लत से जो तुम्हें इस किताब से दूर रखकर ऐसे नुक़्सान से दो चार करना चाहती है जिसकी भरपाई मुम्किन नहीं। सम्भलो ! कि मौत से पहले पहले संभलने और सच्चाई को समझने का मौक़ा है। इसके बाद फ़ैसला ही फ़ैसला है और कुछ नहीं। ऐसा फ़ैसला जो दुनिया के तमाम झूठे फ़ैसलों से ज़्यादा सच्चा होगा।

सूरह ज़ुमर आयत 41 में है **''ऐ पैग़म्बर ! हमने लोगों की हिदायत के लिये ह़क़ के साथ तुम पर ये किताब नाज़िल की है। अब जो इंसान राह पर आ जाएगा वो अपनी ही भलाई के लिये राह पर आएगा और जो ग़लत़ रास्ते पर चलेगा वो अपना ही नुक़्सा़न करेगा। तुम उसके ज़िम्मेदार नहीं हो।''** ये आयत ग़ाफ़िलों को ग़फ़लत की दलदल से निकालने के लिये काफ़ी है। इसमें ग़ौर करने की बातें ये हैं -

- पहली ये कि आसमानी किताब हर शख़्स़ पर नाज़िल नहीं की जाती, सिर्फ़ किसी रसूल या पैग़म्बर पर ही उसका नुजूल होता है।
- दूसरी बात ये कि मौजूदा आसमानी किताब कुरआने अ़ज़ीम तमाम लोगों की हिदायत व रहनुमाई के लिये उतारा गया है। जैसा कि सूरह बक़रह की आयत 185 में भी वाज़ेह़ किया जा चुका है। **हुदल्लिन्नास** वहाँ भी था यहाँ भी है। अगर ये सिर्फ़ मुसलमानों की किताब होती तो **हुदल्लिल्मुस्लिमीन** होता। हुदल्लिन्नास के अल्फ़ाज़ खुले तौ़र पर ऐलान कर रहे हैं कि कुरआन हर इंसान की किताब है। हिदायत व रहनुमाई के सब मोह़ताज हैं। किसी भी क़ाफ़िले को लुटेरों से बचाकर मंज़िले मक़्सूद तक पहुँचाने के लिये किसी मुख़्लिस़ रहनुमा की ज़रूरत होती है। इंसानों के क़ाफ़िले को मफ़ाद परस्त लुटेरों से बचाने के लिये कुरआन सबसे सच्चा और मुख़्लिस़ रहनुमा है। आओ इसकी पनाह में और अपने क़ाफ़िले को लुटने से बचाओ।

- तीसरी बात ये कि कुरआन ह़क़ के साथ नाज़िल किया गया है। इसकी हर आयत सच्चाई की रहबर है, ऐसे रहबर का साथ न देना इसके दिखाये गए रास्ते पर न चलना, खुद को बड़े नुक़्सा़न में डालने के बराबर है। इसीलिए आयत के आख़िर में वाज़ेह़ कर दिया गया कि जो कुरआन के दिखाये हुए रास्ते पर चलेगा तो वो अपने ही फ़ायदे के लिये चलेगा और जो इसकी मुख़ालिफ़त करेगा उसका वबाल गुमराह होने का वबाल ह़क़ से दूर ही चले जाने का वबाल, उसी पर पड़ेगा, पैग़ाम पहुँचाने वाला पैग़म्बर उसका ज़िम्मेदार नहीं है।

सूरह निसाअ आयत 105 में है, **''बेशक हमने ये किताब ह़क़ के साथ तुम पर इसलिये उतारी है ताकि तुम लोगों के बीच उस त़रीक़े से फ़ैस़ला करो जो अल्लाह तआ़ला तुम्हें इस किताब की आयतों की रोशनी में समझा रहा है और तुम ख़यानत करने वालों के त़रफ़दार न बनो।''**

इस आयत में अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से पैग़म्बर को हुक्म दिया जा रहा है कि वो लोगों के बीच होने वाले इख़्तिलाफ़ात और दीगर तमाम मामलात का फ़ैस़ला कुरआनी तालीम के मुत़ाबिक़ करें। फ़ैस़ले के पाबन्द तमाम लोग हैं तो किताब भी तमाम लोगों के लिये हुई न कि कुछ ख़ास़ क़िस्म के लोगों के लिये। जब फ़ैस़ले के पाबन्द सब इंसान हुए तो किताब के हुक्म का पाबंद भी सबको होना चाहिए और ये पाबन्दी एह़काम को इंसानों के फ़ायदे के लिये ही है। नेकियों पर चलने, बुराईयों से बचने का नफ़ा नुक़्सा़न आख़िरकार नेकी करने वालों और बुराईयों से बचने वालों को ही होता है। अल्लाह का न इसमें कोई फ़ायदा है, न नुक़्सा़न, वो तो ऐसी बेनियाज़ ज़ात है कि अगर दुनिया का एक भी इंसान उस पर ईमान न लाए तो उसकी अ़ज़्मत व शान पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। इंसानों ! उस अ़ज़ीमुल मुर्तबत ज़ात से जुड़ो। उसकी किताब से जुड़ो जो आप ही की भलाई और ख़ैरख़्वाही के लिये उतारी गई है। क्या कोई इंसान भड़कते हुए शोलों में खुद को झोंकना पसंद करेगा ? क्या कोई इंसान हमेशा

रहने वाले दुख दर्द और तक्लीफ़ का मुस्तहि़क़ होना चाहेगा ? क्या कोई नेअ़मतों भरे बाग़ों में दाखि़ल होने का आरज़ूमंद न होगा ? सोचो और समझो जवाब आपको खुद ही मिल जाएगा।

सूरह इब्राहीम आयत 1 में है, **''ऐ पैग़म्बर ! ये (कुरआन) एक किताब है जो हमने तुम पर नाज़िल की है ताकि तुम लोगों को अपने रब के हुक्म से अंधेरों से निकालकर रोशनी में ले आओ उस ज़ात के रास्ते की त़रफ़ जो ज़बरदस्त और ह़कीम है।''**

आपकी किताब आपको अंधेरों से निकालकर उजालों की त़रफ़ लाने के लिये उतारी गई है। ये अंधेरे कौनसे हैं ? जिहालत के अंधेरे ग़फ़्लत के अंधेरे, ज़न और गुमान की पैरवी के अंधेरे और ख़्वाहिश परस्ती के अंधेरे। जिहालत इंसान का सबसे बड़ा रोग है। सबसे ख़त़रनाक बीमारी है। जाहिल आदमी तारीकी में भटकता रहता है और उसी को रोशनी समझकर अपनी मंज़िल से दूर होता चला जाता है। इल्म न होने की वजह से इंसान ज़िन्दगी भर उनकी पूजा और इ़बादत में लगा रहता है जो इ़बादत के मुस्तहि़क़ ही नहीं हैं। न उसको नफ़ा पहुँचा सकते हैं, न नुक़्सा़न। न बोलते हैं, न सुनते हैं, न देखते हैं। आपकी किताब आपको अपने सच्चे रब का रास्ता दिखाती है जो सब पर ग़ालिब है, सबकी ख़बर रखता है, जिसकी हर बात, हर हुक्म, हर फ़ैस़ला, हर क़ानून हि़क्मत से भरा हुआ है।

जिहालत की वजह से भोले भाले इंसानों को मफ़ाद परस्त रहनुमा जो दुनियावी हों या दीनी, भेड़ों की त़रह़ जिधर चाहते हैं उधर हँका ले जाते हैं, उनकी नज़र सिर्फ़ अपने फ़ायदे पर होती है। उनकी बला से कोई तबाही के गढ़े में गिरता है तो गिरे, कोई दोज़ख़ की राह पर लगता है तो लगे। ऐसे रहनुमा जो लुटेरे और रहज़न कहलाये जाने के ज़्यादा मुस्तहि़क़ हैं, इंसानों के दोस्त नहीं दुश्मन हैं। मुहलिक दुश्मन। मज़हब के नाम पर ये लोग जाहिल इंसानों को ऐसे रास्तों पर डाल देते हैं जो उन्हें हलाक कर डालें। अल्लाह के अ़ज़ाब में मुब्तला कर दीन के नाम पर दुकानदारी करना उन रहबरों

का पेशा बन जाता है। जिहालत की वजह लोग ज़िन्दगी भर उनके अस़ली चेहरों की पहचान नहीं कर पाते। आपकी किताब आपको तबाही से बचाने के लिये ऐसे ग़लत़ रहबरों की निशानदेही करती है उनकी ह़क़ीक़त बताती है और इ़ल्म की रग़बत दिलाती है ताकि आप जिहालत के घटाटोप अंधेरे से निकल आएँ।

दूसरा अंधेरा **ग़फ़लत** का अंधेरा है जिससे निकलने के त़रीके़ आपकी अपनी किताब आपको बताती है। ग़फ़लत भी जिहालत की त़रह़ इंसान का बड़ा ख़त़रनाक रोग है। ग़ाफ़िल इंसान ज़िन्दगी के मक़्स़द को ही भूल जाता है। अपने आग़ाज़ और अंजाम से ग़ाफ़िल होकर वो जानवरों की सत़ह़ तक पहुँच जाता है। मौत और आख़िरत के तस़व्वुर से उसका ज़हन ख़ाली हो जाता है। ग़फ़लत का नशा चढ़ता है तो उतरने का नाम ही नहीं लेता। ग़ाफ़िल इंसान उस नशे में ह़क़ और बात़िल, सही और ग़लत़, ह़राम और ह़लाल, जाइज़ और नाजाइज़ सबको भुला देता है जबकि उन चीज़ों का फ़र्क़ ही इंसान को जानवरों की सत़ह़ से ऊँचा उठाता है। उन चीज़ों के फ़र्क़ को भुला देने की वजह से इंसान की इंसानियत उसके अंदर से निकल जाती है। ह़ैवानियत उस पर ग़ालिब आ जाती है। कु़रआन की आयात में ग़ौरो फ़िक्र इंसान को इंसान बनाकर उसके अख़्लाक़ व किरदार को ऊँचा उठाकर दूसरों के लिये उसे एक नमूना बना देता है। आओ अपनी किताब कु़रआन की त़रफ़। बनो अच्छे इंसान जो ग़फ़लत के नशे में चूर न हों बल्कि अपनी ह़क़ीक़त को समझते हों, अपने रब को पहचानते हों और उसका ह़क़ अदा करते हों। उसी की इ़बादत में खोये हुए हों, उसी से मुरादें मांगते हों, उसी को नफ़ा और नुक़्स़ान का मालिक समझते हों। उनके लिये वही ह़ाजत रवा और मुश्किल कुशा हो।

तीसरा अंधेरा है **ज़न्न व गुमान** का अंधेरा, जिसमें आपकी किताब आपको और तमाम इंसानों को निकालकर आपकी ज़िन्दगी को रोशन, मुनव्वर और ताबनाक बनाना चाहती है। कु़रआन कहता है कि दुनिया में अक्सर लोग ज़न्नो गुमान की पैरवी में लगे हुए हों

जबकि ज़न्न यानी ख़्याल हक़ के मामले में कुछ भी काम नहीं आता। ज़न्न व गुमान की पैरवी ने मूर्तियों और मज़ारों में अल्लाह का जलवा दिखाकर इंसान को अपने ख़ालिक़ और मालिक की बन्दगी से दूर कर दिया। ख़्याल ही ख़्याल में इंसानों की भीड़ उनको मुरादों को पूरी करने वाले, नफ़ा देने वाले, नुक़्सान से बचाने वाले समझकर उनकी पूजा पाठ में उन पर नज़राने और चादरें चढ़ाने में लगी हुई है। कोई कह सकता है कि अल्लाह का तसव्वुर भी तो ख़्याली है। अल्लाह को मानने वाले अपने ख़्यालों में अल्लाह को मौजूद समझकर उसकी इबादत में लगे रहते हैं। जवाब ये है कि अल्लाह का तसव्वुर ख़्याली नहीं है। उसे महसूस किया जाता है। हवा को किसने देखा है, उसकी ठण्डक और गर्मी से उसके होने और चलने का एहसास हमें होता है। दुनिया के अदलते बदलते हालात कायनात में होने वाली तब्दीलियाँ भी अल्लाह के वुजूद को मेहसूस कराती हैं। कायनात का पूरा निज़ाम उसके मौजूद होने की दलील है। कोई कह सकता है कि कायनात तो ऑटोमेटिक तरीक़े से चल रही है। उसका चलाने वाला कोई नहीं है। ये गुमान भी सिर्फ़ गुमान है। कोई भी चीज़ जो ऑटोमेटिक हो उसको ऑटोमेटिक बनाने में भी किसी का हाथ होता है। मिसाल के लिये ऑटोमेटिक घड़ी को ऑटोमेटिक बनाने में घड़ीसाज़ का हाथ होता है। घड़ीसाज़ न होता तो घड़ी भी ऐसी न बनती। कायनात अगर ऑटोमेटिक तरीक़े से चल रही है तो इसके पीछे भी अल्लाह की कुदरत जलवा कारफ़र्मा है। सुनिए आपकी अपनी किताब क्या कहती है -

कुरआन की सूरह आले इमरान की आयत नम्बर 190 में है **''बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में और रात–दिन के आने जाने में अक़्लवालों के लिये बड़ी निशानियाँ हैं।''**

सूरह बक़रह आयत 194 में है **''बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में, रात और दिन के आने जाने में, उन कश्तियों में जो लोगों को फ़ायदा पहुँचाने वाला सामान लेकर समुन्द्र में तैरती हैं, उस पानी में जो अल्लाह ने आसमान से**

उतारा और उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया और उसमें हर त़रह़ के जानवर फैला दिये और हवाओं के चलने मे और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दरम्यान अल्लाह के हुक्म के ताबेदार हैं उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं।''

सूरह यूनुस आयत 6 में है **''बेशक दिन–रात के आगे पीछे आने जाने में और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में जो कुछ पैदा किया है उसमें उन लोगों के लिये बड़ी निशानियाँ हैं जिनके दिलों में अल्लाह का ख़ौफ़ हो।''**

ज़न्नो गुमान की पैरवी इंसान को बेअक़्ल बना देती है, ह़क़ से दूर कर देती है। अक़्लवालों के लिये ये कायनात और इसका निज़ाम अल्लाह के वुजूद की मज़बूत़ दलील है। अक़्ल के अंधों को कुछ सुझाई नहीं देता। अक़्ल वाले ही अल्लाह से डरते हैं। बेअक़्ल बेख़ौफ़ बनकर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और अपना सरमाया ह़यात ज़न्नो गुमान की पैरवी में ज़ाया कर बैठते हैं।

चौथा अंधेरा **ख़्वाहिश परस्ती** का अंधेरा है। ख़्वाहिश परस्ती ख़ुदा परस्ती की ज़िद है। मूर्ती पूजना, मज़ारों को सज्दा करना ही ज़न्नो गुमान की पैरवी करना नहीं है बल्कि ख़्वाहिशपरस्ती भी यही मक़ाम रखती है। सूरह फ़ुरक़ान की आयत 43 में है **''क्या तुमने उस शख़्स़ को नहीं देखा जिसने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को अपना मअ़बूद बना लिया हो। क्या तुम उसके ज़िम्मेदार बन सकते हो।''**

सूरह जासिया आयत 23 में है **''क्या तुमने उस शख़्स़ को नहीं देखा जिसने अपना ख़ुदा अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को बना लिया है और इल्म के बावजूद अल्लाह ने उसे गुमराही में डाल दिया। और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया।''**

ख़्वाहिश को इलाह और मअ़बूद बनाने का क्या मत़लब है? ख़्वाहिश को सज्दा तो नहीं किया जाता। ख़्वाहिश के आगे हाथ

जोड़कर तो नहीं खड़े होते। ख़्वाहिश पर नज़राने और चढ़ावे तो नहीं चढ़ाये जाते। मत़लब ये है कि इंसान जब अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश का बन्दा बन जाए और उसके इशारे पर उसके कहे पर चलता चला जाए तो ये उसको खुदा और मअ़बूद बनाने जैसा ही है। हर दौर के इंसान को उसकी नफ़्सानी ख़्वाहिश ने ही सही रास्ते से भटकाया है। जो पत्थर अच्छा लगा, जो मूर्ती दिल को भा गई, जिस मज़ार से मुरादें पूरी होने का ख़्याल दिल में जम गया, उसी के लिये खुद को वक़्फ़ कर देना हर दौर में हुआ है और आज भी हो रहा है। नफ़्सानी ख़्वाहिश जब इंसान पर क़ाबू पा लेती है तो वो बिलकुल अंधा बन जाता है। सही और ग़लत़ के चक्कर में वो नहीं पड़ता। जिस चीज़ से उसका नफ़्स मुत्मइन हुआ और उसकी ख़्वाहिश पूरी हो रही हो वो उसी की त़रफ़ दौड़ता चला जाता है। नफ़्सानी ख़्वाहिश इंसान को हैवान बना देती है।

सिर्फ़ मुसलमानों को नहीं बल्कि दुनिया के तमाम इंसानों को इन चार क़िस्म के अंधेरों से निकालकर रोशनी की त़रफ़ लाना आपकी अपनी किताब का पैग़ाम है। अपनी किताब को खूब पढ़ें और समझकर पढ़ें। आप ऐसी रोशनी में नहा जाएँगे जो आपके दिलो दिमाग़ में एक इंक़िलाब बरपा कर देगी। आपको जिहालत, ग़फ़लत, ज़न्नो गुमान की पैरवी और नफ़्सानी ख़्वाहिश से छुटकारा देगी। आप इ़ल्म वाले, अ़क़्ल वाले, ह़क़ को पहचानने वाले और खुदापरस्त बन्दे बन जायेंगे। आप मग़्लूब से ग़ालिब और मह़कूम से ह़ाकिम हो जायेंगे। तजुर्बा करना शर्त़ है। दुनिया एक तजुर्बागाह है।

सूरह इब्राहीम आयत 52 में है **''ये कुरआन तमाम लोगों तक पहुँचाने के लिये है ताकि सब लोग होश में आ जाएँ और इस ह़क़ीक़त को जान लें कि उनका मअ़बूद वही एक अल्लाह है और ताकि अ़क़्लमंद लोग नस़ीह़त पकड़े, इ़ब्रत ह़ासि़ल करें।''**

कुरआन नाज़िल किये जाने के चार मक़ासि़द इस आयत में बयान किये गए हैं। पहला मक़्स़द ये कि -

- कुरआन का पैग़ाम दुनिया के तमाम इंसानों के लिये है। मानना न मानना अलग बात है। आपकी अपनी किताब आपको भड़कती हुई आग से बचाना चाहती है मगर आप हैं कि उसी किताब से बेपरवाही बरत रहे हैं। उसे मुसलमानों की किताब समझकर उसके फ़ायदों से खुद को महरूम किये हुए हैं। मौत से पहले पहले मौक़ा है इसकी तरफ़ पलटकर इसकी तालीम पर अ़मल करने का, इसके बाद अच्छी ज़िन्दगी है या शर्मिन्दगी ही शर्मिन्दगी।
- दूसरा मक़्सद ये है कि आपकी अपनी किताब आपको और दुनिया के तमाम इंसानों को उन सच्चाईयों से वाकि़फ़ कराना चाहती है जिनको भूलने के नतीजे में आप बुलंदियों से महरूम होकर पस्तियों में उतरते चले गए और आपको एहसास तक न हुआ। आप एक पानी की हक़ीर बूँद (नुत्फ़े) के सिवा कुछ भी न थे। अल्लाह ने सि़र्फ़ और सि़र्फ़ अपनी कुदरत से माँ के पेट में तीन अंधेरियों के अंदर आपको इंसान की शक्ल देकर सही व सालिम पैदा कर दिया। फिर आपको रिज़्क़ अ़ता किया। फिर आप अपनी मुक़र्ररा उ़म्र पूरी करने के बाद मौत की आग़ोश में चले जाएँगे। फिर कि़यामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे और अपने उन कामों का बदला पायेंगे जो आप दुनिया में करते रहे थे। ये सच्चाईयाँ कुरआन की मुख़्तलिफ़ सूरतों की मुख़्तलिफ़ आयतों में बयान की गई हैं। आओ कुरआन को अपनी किताब तो समझें। कुरआन आपको वो सब कुछ बता देगा जिसे जानकर आप फिर पस्तियों से निकलकर बुलंदियों तक जा पहुँचेंगे।
- आयत में तीसरा मक़्सद ये बयान किया गया है कि आप ये बात जान लें और उसे अपने दिलो दिमाग़ की गहराईयों में उतार लें कि आपका मअ़बूद एक अकेला यक्ता, यगाना है। बेमिसाल है। तादाद के हि़साब से अल्लाह को एक तो सभी मानते हैं। मुसलमान कहते हैं खुदा एक है। ग़ैर मुस्लिम कहते हैं ईश्वर एक है। गोड एक है, सबका मालिक एक है मगर सि़फ़त के

एअ़तिबार से अकेला बेमिसाल एक के साथ न मानने की ग़लती ने ज़्यादातर इंसानों को सीधी राह से भटका दिया। आपकी अपनी किताब आपको बताती है कि आपका रब अपनी सि़फ़ात में बेमिसाल है। उसकी कोई सि़फ़त कोई ख़ूबी किसी दूसरे में नहीं पाई जाती। कोई मख़्लूक़, ख़ालिक़ के बराबर नहीं और जो बेइ़ल्मी की वजह से या दूसरों के बहकाने की वजह से ऐसा समझ लेते हैं वो शिर्क जैसी बुराई में पड़ जाते हैं। सब कुछ देखने वाला, जानने वाला, नफ़ा पहुँचाने वाला, नुक़सा़न से दोचार करने वाला रिज़्क़ देने वाला, मौत से हमकिनार करने वाला, क़ियामत के दिन दोबारा मुर्दा को ज़िन्दा करने वाला सि़र्फ़ और सि़र्फ़ अल्लाह है, कोई और नहीं।

- चौथा मक़्स़द ये है कि अ़क़्लमंद लोग कु़रआन की नस़ीह़तों को याद रखें और उनको क़बूल करें। साबित हुआ कि नस़ीह़त को सुनकर उसे क़बूल करना और याद रखना अ़क़्लमंदों का काम है। बेअ़क़्ल लोग किसी नस़ीह़त को न याद रखते हैं और न उसे क़बूल करते हैं। आप ऐसे बेवकूफ़ और नासमझ न बनें कि आपकी अपनी किताब की तालीम को फ़रामोश कर दें।

उठाईये अपनी किताब को अपने हाथों में, पकड़िये उसको मज़बूती से, सीखिए उसके अंदर बयान किये गए उ़लूम को और ह़ासि़ल कीजिए उन फ़ायदों को जिनसे आप अब तक मह़रूम रहे।